• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

श्री हनुमान चालीसा

हिन्दी में

Thekipkop Beats

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥१॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥२॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुँचित केसा॥४॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे । काँधे मूँज जनेऊ साजे॥५॥
शंकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जगवंदन॥६॥

विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर॥७॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मनबसिया॥८॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा॥९॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सवाँरे॥१०॥

Thekipkop Beats

लाय सजीवन लखन जियाए। श्री रघुबीर हरषि उर लाए॥११॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥१३॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥१४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥१५॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥१६॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना॥१७॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही। जलधि लाँघि गए अचरज नाही॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत ना आज्ञा बिनु पैसारे॥२१॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहु को डरना॥२२॥

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तै कापै॥२३॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै। महावीर जब नाम सुनावै॥२४॥

नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥२५॥

संकट तै हनुमान छुडावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥२६॥

Thekipkop Beats

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम

सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै॥२८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥२९॥

साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे॥३०॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥३३॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई। जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई॥३४॥

और देवता चित्त ना धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई॥३५॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥३६॥

जै जै जै हनुमान गुसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥३८॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा। होय सिद्ध साखी गौरीसा॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मह डेरा॥४०॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

Thekipkop Beats

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

संकटमोचन हनुमानाष्टक का पाठ

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ॥

देवन आन करि बिनती तब, छांड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥ 1 ॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि शाप दिया तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥

के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु,सो तुम दास के शोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥2॥

अंगद के संग लेन गये सिय,खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु,बिना सुधि लाय इहाँ पगु धारो ॥

हेरि थके तट सिंधु सबै तब,लाय सिया-सुधि प्राण उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,संकटमोचन नाम तिहारो ॥3॥

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ॥

चाहत सीय अशोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥4॥

Thekipkop Beats

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

बाण लग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावण मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो॥

आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥5॥

रावण युद्ध अजान कियो तब, नाग कि फांस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयोयह संकट भारो॥

आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥6॥

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिति मंत्र बिचारो॥

जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावण सैन्य समेत सँहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥7॥

काज किये बड़ देवन के तुम, वीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो॥

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥8॥॥

Thekipkop Beats

दोहा

॥लाल देह लाली लसे, अरू धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

॥ इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

Thekipkop Beats

श्री बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमंत संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज बिलंब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

जैसे कूदि सिंधु महिपारा। सुरसा बदन पैठि बिस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका॥

जाय बिभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा॥
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा। अति आतुर जमकातर तोरा॥

अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥

अब बिलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अंतरयामी॥
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर है दुख करहु निपाता॥

जै हनुमान जयति बल-सागर। सुर-समूह-समरथ भट-नागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥
जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकरसुवन बीर हनुमंता॥

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •
जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

बदन कराल काल-कुल-घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर। अगिन बेताल काल मारी मर॥

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की॥
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै। राम दूत धरु मारु धाइ कै॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं॥
जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलंब न लावौ॥

जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा॥
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं। यहि औसर अब केहि गोहरावौं॥

उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहाई। पायँ परौं, कर जोरि मनाई॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल॥
अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनंद हमारौ॥

यह बजरंग-बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिरि कवन उबारै॥
पाठ करै बजरंग-बाण की। हनुमत रक्षा करै प्रान की॥

यह बजरंग बाण जो जापैं। तासों भूत-प्रेत सब कापैं॥
धूप देय जो जपै हमेसा। ताके तन नहिं रहै कलेसा॥

दोहा

उर प्रतीति दृढ़, सरन है, पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान॥

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम

श्री राम अवतार स्तोत्र

भये प्रगट कृपाला, दीनदयाला कौसल्या हितकारी
हरषित महतारी, मुनि मनहारी अद्भुत रूप बिचारी

लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा, निज आयुध भुज चारी
भूषन वनमाला, नयन बिसाला, सोभासिंधु खरारी

कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहित बिधि करूं अनंता
माया गुन ग्यानातीत अमाना, वेद पुरान भनंता

करुना सुख सागर, सब गुन आगर, जेहि गावहिं श्रुति संता
सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयौ प्रकट श्रीकंता

ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति बेद कहे
मम उद सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहे

उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहे
कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे

माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा
कीजे सिसुलीला, अति प्रियसीला, यह सुख पराम अनूपा

सुन बचन सुजाना, रोदन ठाना, होई बालक सुरभूपा
यह चरित जे गावहि, हरिपद पावहि, तेहि न परहिं भवकूपा।।

॥इति श्रीरामावतार स्तोत्र संपूर्णम्॥

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

श्रीराम स्तुति

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भाव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम्।।

कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्।
पट्पीत मानहु तडित रूचि शुचि नौमी जनक सुतावरम्।।

भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारू अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर-धूषणं।।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम ह्रदय कुंज निवास कुरु कामादी खल दल गंजनम्।।

छंद :

मनु जाहिं राचेऊ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर सावरों।
करुना निधान सुजान सिलू सनेहू जानत रावरो।।

एही भांती गौरी असीस सुनी सिय सहित हिय हरषी अली।
तुलसी भवानी पूजि पूनी पूनी मुदित मन मंदिर चली।।

।।सोरठा।।

जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके।।

अंजनि पुत्र महाबलदायी। संतान के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारी सिया सुध लाए।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारी असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आणि संजीवन प्राण उबारे।
पैठी पताल तोरि जमकारे। अहिरावण की भुजा उखाड़े।

बाएं भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।
सुर-नर-मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।
लंकविध्वंस कीन्ह रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

जो हनुमानजी की आरती गावै। बसी बैकुंठ परमपद पावै।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

|| जय हनुमान | जय बजरंग बली ||

जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •